



# LIFE

expectancy

---

---

---

---

---

---

---

---



our LIFE EXPECTANCY is rooted in God's desire that we enjoy our salvation and expect God to fulfill His purposes in every aspect of our lives.

---

---

---

---

---

---

---

---



## STARTING POINT:

- how are you?
- where are you?
- whose are you?
- what are you?

---

---

---

---

---

---

---

---



## DECISION POINT

Is it important for you to know God? If so, how will you learn?

---

---

---

---

---

---

---

---



## TRUSTING POINT

What do I believe is God's motivation in His interaction with me?

---

---

---

---

---

---

---

---



## TURNING POINT

Do I possess a singular vision that will ground me, define me, inspire me, and release me? If so... what is it?

---

---

---

---

---

---

---

---



God's Dominion  
*our life-long vision*

---

---

---

---

---

---

---

---



- *God's redemptive activity*
- *God's rule in our midst*
- *God's realm*

---

---

---

---

---

---

---

---



## ACTION POINT

If I possess a vision for my life (last week) what must I do to live my vision?

---

---

---

---

---

---

---

---



*recognize*  
*surrender*  
*grasp*

---

---

---

---

---

---

---

---



## LAUNCHING POINT

What lifestyle will I embrace that is consistent with my vision? disciplines me for this vision? and advances my aspirations?

---

---

---

---

---

---

---

---



long lifestyle

Luke 17.20-21

---

---

---

---

---

---

---

---

WORSHIP  
our **LIFE** long  
lifestyle

---

---

---

---

---

---

---

---

WORSHIP  
some foundational  
thoughts

---

---

---

---

---

---

---

---



Worship  
*widens the gap  
between God and us*

---

---

---

---

---

---

---

---



*Isaiah 6.5  
Ezekiel 1.28  
Luke 5.8  
Revelation 1.17*

---

---

---

---

---

---

---

---



Worship  
*narrows the gap  
between God and us*

---

---

---

---

---

---

---

---



Isaiah 6.6-8  
Ezekiel 2.1  
Luke 5.10  
Revelation 1.17

---

---

---

---

---

---

---

---



Worship  
*will stretch us between  
the poles of  
God's transcendence  
and God's immanence*

---

---

---

---

---

---

---

---



Worship  
*is what WE do and  
what WE give*

---

---

---

---

---

---

---

---



**LET'S BE CLEAR**  
God is NOT seeking His  
own glory...

---

---

---

---

---

---

---

---



**LET'S BE CLEAR**  
God is NOT seeking His  
own glory... He is the  
“glory-giver” not the “glory-  
grabber”.

---

---

---

---

---

---

---

---



*Look at Jesus...*  
*Hebrews: 11.3 And He is the  
radiance of His glory and the exact  
representation of His nature, and  
upholds all things by the word of His  
power.*

---

---

---

---

---

---

---

---



*2 Corinthians 3.18: 18 But we all,  
with unveiled face, beholding as in a  
mirror the glory of the Lord, are  
being transformed into the same  
image from glory to glory, just as  
from the Lord, the Spirit.*

---

---

---

---

---

---

---

---



*John 5.44 "How can you believe, when you receive glory from one another and you do not seek the glory that is from the one and only God?"*

---

---

---

---

---

---

---

---



*John 17.22 "The glory which You have given Me I have given to them, that they may be one, just as We are one;"*

---

---

---

---

---

---

---

---



*Romans 8.21 that the creation itself also will be set free from its slavery to corruption into the freedom of the glory of the children of God.*

---

---

---

---

---

---

---

---



*Ephesians 5.27 that He might present to Himself the church in all her glory, having no spot or wrinkle or any such thing; but that she would be holy and blameless.*

---

---

---

---

---

---

---

---



*Philippians 3.21 who will transform the body of our humble state into conformity with the body of His glory, by the exertion of the power that He has even to subject all things to Himself.*

---

---

---

---

---

---

---

---



**Worship**  
*is what WE do and  
what WE give*

---

---

---

---

---

---

---

---

**WORSHIP**  
is a doxological  
lifestyle

---

---

---

---

---

---

---

---



*Romans 12.1 ...present your bodies a living and holy sacrifice, acceptable to God, which is your spiritual service of worship. 2 And do not be conformed to this world, but be transformed by the renewing of your mind, so that you may prove what the will of God is, that which is good and acceptable and perfect.*

---

---

---

---

---

---

---

---



Colossians 3.17 *Whatever you do in word or deed, do all in the name of the Lord Jesus, giving thanks through Him to God the Father.*

---

---

---

---

---

---

---

---



---

---

---

---

---

---

---

---



---

---

---

---

---

---

---

---



---

---

---

---

---

---

---

---



---

---

---

---

---

---

---

---

---

---



---

---

---

---

---

---

---

---

---

---



---

---

---

---

---

---

---

---

---

---



---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

**WORSHIP**  
is a doxological  
lifestyle

---

---

---

---

---

---

---

---



**LET'S BE CLEAR**  
Our worship life follows a  
sabbatical rhythm

---

---

---

---

---

---

---

---



**LET'S BE CLEAR**  
Our worship life follows a  
sabbatical rhythm that is  
personal, communal,  
scheduled, and treasured.

---

---

---

---

---

---

---

---

**WORSHIP**  
is the lifestyle that  
distinguishes us...  
Revelation 19.19-20.15

---

---

---

---

---

---

---

---

# WORSHIP

is the lifestyle that  
unifies our life's  
vision

Romans 12.1-2; Colossians 3.17

---

---

---

---

---

---

---

---



# LIFE

long lifestyle

Luke 17.20-21

---

---

---

---

---

---

---

---